वर्ष : 11 अंक : 4

अक्टूबर–दिसम्बर 2016

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. जे. कुमार, कुलपति

मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा

सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

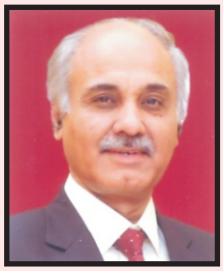

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का अक्टूबर–दिसम्बर, 2016 (वर्ष 11:4) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में आयोजित "अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी" नवीनतम कृषि तकनीकों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिसमें किसानों की भारी भागीदारी हमारा उत्साहवर्धन करती है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि विगत त्रैमास में 100वां अखिल भारतीय किसान मेला का भव्य रूप से आयोजन किया गया, जिसमें कृषि विकास हेतु कार्यरत राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय सैकड़ों फर्मों तथा हजारों किसानों ने हमें बहुत प्रेरित किया है। आगामी 101वां अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रर्दशनी मार्च 04–07, 2017 में आयोजित हो रही है, जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(जे. कुमार)
कुलपति

100वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 100वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन अक्टूबर 17–20, 2016 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन 17 अक्टूबर, 2016 को प्रातः 11 बजे मुख्य अतिथि, मा. राज्यपाल उत्तराखण्ड, डा. के. के. पॉल द्वारा कुलपति डा. जे. कुमार, स्थानीय विधायक श्री राजेश शुक्ला एवं मा. प्रबन्ध परिषद सदस्य श्री राजेन्द्रपाल सिंह, सुश्री शिल्पी अरोरा तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले का उद्घाटन करने के बाद अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेला प्रांगण में लगे स्टॉलों का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। ततपश्चात् गाँधी सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, डा. के.के. पॉल ने अपने सम्बोधन में कहा कि पन्तनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित आधुनिक तकनीक और नई प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त बीज पर्वतीय क्षेत्र के किसानों तक पंहुचना बेहद जरूरी है, ताकि पर्वतीय कृषि को अधिक उत्पादक और लाभकारी बनाया जा सके तथा पर्वतीय युवाओं को कृषि से जोड़ा जा सके। डा. पाल ने कहा कि वैज्ञानिकों को उत्तराखण्ड के सुदूर क्षेत्रों के किसानों से सम्पर्क कर वहां की परिस्थितियों और किसानों के सुझावों के अनुसार अपने शोधों को दिशा देनी चाहिए। साथ ही कम पानी की आवश्यकता और अधिक प्रोटीन वाली एवं रोगरोधी पोषक प्रजातियों के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। डा. पाल ने सेब, अखरोट, औषधीय और अन्य पर्वतीय फसलों की उच्च

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मा. राज्यपाल उत्तराखण्ड, डा. के.के. पॉल

गुणवत्तायुक्त एवं गन्ने की कम पानी में अच्छा उत्पादन देने वाली प्रजातियों के विकास पर बल दिया।

राज्यपाल डा. के.के. पॉल ने विश्वविद्यालय के कई वैज्ञानिकों की पुस्तकों का विमोचन किया। डा. रूचिरा तिवारी की 'मधुमक्खी पालन–समस्याएं एवं समाधान', डा. प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव, डा. सत्यप्रताप पचौरी और डा. अरविन्द शुक्ला की 'सूक्ष्म एवं गौण पोषक तत्वों के स्तर एवं उनके प्रयोग की संस्तुतियां', डा. रमेश चन्द्र और उनकी टीम ने 'दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकें' के साथ ही एटिक के प्रभारी डा. रामजी मौर्य और टीम द्वारा सम्पादित किसान डायरी का विमोचन किया गया। मेले की फोटो एल्बम का भी विमोचन हुआ। राज्यपाल ने पन्तनगर विश्वविद्यालय के पूर्व निदेशक संचार एवं प्रसार डा. शिव सागर सिंह, पूर्व निदेशक प्रसार डा. के.पी. सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

कुलपति डा. जे. कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि वर्ष 1965 में शुरू किए गए किसान मेले की संकल्पना काफी सफल हुई, जिसके बाद से किसान मेला प्रत्येक वर्ष दो बार आयोजित किया जा रहा है। देश में हुई हरित क्रांति, श्वेत क्रांति और नीली क्रांति आदि विभिन्न क्रान्तियों से देश की कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में आशातीत वृद्धि हुई है। जलवायु परिवर्तन तथा लघु एवं सीमान्त कृषकों की संख्या में वृद्धि जैसी चुनौतियों का भी हल निकाला जाना चाहिए। उन्होंने छोटे किसानों को खाद्य सुरक्षा एवं अगली हरित क्रान्ति के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए उनके अनुसार तकनीकी के विकास पर बल दिया। समारोह के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत एवं समारोह के अन्त में निदेशक, अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/प्रदर्शनों का अवलोकन, रबी की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं के निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय करने में रही। इसके अलावा विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मा. राज्यपाल

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन मुख्य अतिथि पूर्व निदेशक प्रसार एवं संचार डा. शिव सागर सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। इसलिए हमें किसानों की समस्याओं को समझकर उनका त्वरित निराकरण करना चाहिए। डा. सिंह ने कहा कि जिस तरह भारतीय फौज बोलती नहीं बल्कि पराक्रम दिखाती है ठीक उसी तरह भारत का किसान भी बोलता नहीं काम करके खेती में पराक्रम दिखाता रहता है। किसान के पराक्रम के कारण ही आज देश में हर क्षेत्र में कई गुना प्रगति हुई है। खाद्यान्न उत्पादन 65 मिलियन टन से बढ़कर 265 मिलियन टन पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि पन्तनगर विश्वविद्यालय के संचार निदेशालय को अपने रेडियो एवं टीवी कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए। ग्रामीण स्तर पर चर्चा मंडल स्थापित किए जाएं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक घर में गाय को पाला जाय।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मा. मुख्य अतिथि

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 198 बड़ी एवं 110 छोटी फर्मों सहित कुल 308 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में 19,709 पंजीकृत कृषकों सहित लगभग 70,000 से अधिक आगन्तुकों ने प्रतिभाग किया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 75 लाख से अधिक मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री की गई तथा निजी फर्मों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 1 करोड़ के कृषि निवेशों जैसे बीज, उर्वरकों, रसायनों इत्यादि की बिक्री की गई। इस किसान मेले में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के कई राज्यों से भी बड़ी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया। समारोह के अन्त में निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री चौधरी सतेन्द्र सिंह, ग्राम–चौधरी फार्म शहदौरा, (ऊधमसिंहनगर); श्री सत्यवीर सिंह, ग्राम–बहादरपुर जट, (हरिद्वार); श्री नील बहादुर चन्द, ग्राम–किमतौली, (पिथौरागढ़); श्री मोहन सिंह बिष्ट, ग्राम–ल्वाणी, (चमोली); श्री कैलाश चन्द्र सिंह देवका, ग्राम–चाँफी, (नैनीताल); श्री सूर्य प्रकाश बहुगुणा, ग्राम–हरीपुर, (देहरादून); श्री पूरन सिंह बोरा, ग्राम–चौरा, (अल्मोड़ा) एवं श्रीमती मुन्नी देवी, ग्राम–सुई डुंगरी, (चम्पावत) हैं।

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए मा. राज्यपाल

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. शक्तिमान–राजकोट (गुजरात) को तथा सर्वोत्तम प्रदर्शन का पुरस्कार मै. कोरटैक एग्री एण्ड बायो सॉल्यूशन प्रा. लि.–नई दिल्ली को प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल्स एवं ट्रैक्टर समूह में मै. किसान ट्रेडिंग कॉरपोरेशन–रूद्रपुर; पावर टिलर्स, फार्म मशीनरी एवं टूल समूह में मै. जय गुरूदेव इण्डस्ट्रीज–रूद्रपुर, मै. जग्गी एग्रीकल्चर वर्क्स–कबूलपुर (पंजाब), मै. पंजाब मोटर्स–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर), मै. दशमेश एग्रीकल्चर वर्क्स (किसान फर्टिलाइजर एजेन्सी)–काशीपुर (ऊधमसिंहनगर); इरिगेशन, पम्प, मोटर्स एवं कन्ट्रोल समूह में मै. वी.पी.एस. एग्रोटैक लि.–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. टाटा कैमिकल्स लि.–बरेली; पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में मै. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन प्रा. लि.–दिल्ली; एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्टस् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ; वेटेरिनरी, मेडिसिनल एवं एनिमल

फीड समूह में मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि. –मुम्बई, मै. मैनकाइन्ड फार्मा लि. –दिल्ली; बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में एस.बी.आई. –पन्तनगर, पी.एन.बी.–पन्तनगर, बैंक ऑफ बड़ौदा–रूद्रपुर; सीड समूह में मै. जागौर एग्रो सीड्स प्रा. लि.–हल्द्वानी (नैनीताल), मै. बॉयर सीड्स प्रा. लि.–लखनऊ एवं विविध समूह में मै. फालकॉन गार्डन टूल्स–लुधियाना (पंजाब), मै. बी.के.टी. टायर्स–मुम्बई के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार प्रदान करते हुए मा. कुलपति डा. जे. कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा अक्टूबर–दिसम्बर, 2016 में कृषकों, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओ हेतु 30 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 544 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास मे 49 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 687 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।
- अक्टूबर–दिसम्बर, 2016 में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में 07 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित की गयी है। विगत त्रैमास में विभिन्न फसलों पर 09 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 179 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा कृषकों को नई तकनीक के बारे में विस्तार से बताया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 01 तकनीकी लेख एवं प्रसार साहित्यों का प्रकाशन विभिन्न पत्रिकाओं में किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 34 कृषक गोष्ठी में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 4389 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं कृषकों की समस्याओं का मौके पर ही निदान भी बताया गया।
- जय किसान जय विज्ञान दिवस/तकनीकी सप्ताह का आयोजन दिसम्बर 23–29, 2016 को केन्द्र में किया गया। इस अवसर पर किसान गोष्ठी, कृषक वैज्ञानिक संवाद, तकनीकी प्रदर्शन कार्यक्रम, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का अवलोकन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, चारा उत्पादन, स्थानीय उत्पादों का मूल्यवर्धन एवं छोटे कृषि यन्त्रों का प्रदर्शन आदि विषयों पर चर्चा की गयी, जिसमें 334 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

जय किसान जय विज्ञान दिवस के अवसर पर कृषक गोष्ठी

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 202 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 213 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 35 प्रक्षेत्रों पर कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा जमालपुर कलाँ, दौलतपुर तथा किशतीपुर में एक–एक जागरूकता दिवस का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीणों, महिलाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के तत्वाधान में दिसम्बर 05, 2016 को 'विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मा0 केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर केन्द्र एवं सभी रेखीय विभागों ने प्रदर्शनी लगाई। कृषि विभाग, हरिद्वार ने इस कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग किया। इस अवसर पर जनपद के कृषकों ने बढ़चढ़ कर प्रतिभाग किया।

विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन

- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 23, 2016 को 'किसान दिवस' के अवसर पर कृषकों के उत्साहवर्धन हेतु कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें कृषकों और वैज्ञानिकों ने कृषि सम्बन्धी समसामयिक विषयों पर चर्चा की। दिसम्बर 23–29, 2016 तक एक तकनीकी सप्ताह का आयोजन किया गया। इसमें कृषकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रक्षेत्र दिवस एवं स्वच्छता जागरूकता दिवस का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं को 'मशरूम उत्पादन' करवाने के उद्देश्य से एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण दिसम्बर 19–23, 2016 को आयोजित किया गया। इसमें ग्रामीण युवाओं ने मशरूम उत्पादन के व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त किया। इसमें कृषक प्रक्षेत्र

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- विगत त्रैमास में केन्द्र पर 07 तथा केन्द्र से बाहर 11 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 144 (पुरूष 87 एवं 57 महिला) एवं 225 (पुरूष 160 एवं 65 महिला) कृषक लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 72 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 495 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियां प्राप्त करने हेतु 534 किसानों द्वारा 267 भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 04 टी.वी. कार्यक्रम दिए गए और प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 04 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में गेंहूँ–2.0 है., मसूर–13.0 है., सरसों–1.0 है., सब्जी मटर–0.5 है., जई–0.5 है., बरसीम–0.5 है. तथा अन्य सब्जियों को लगाया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कुल 03 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। सितम्बर 26, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़ द्वारा अंगीकृत ग्राम–किमतोली में अरहर की फसल पर प्रक्षेत्र दिवस किया गया और सितम्बर 27, 2016 व सितम्बर 29, 2016 को ग्राम–किमतोली व तल्लीरियासी में सोयाबीन की उन्नत प्रजाति पर प्रक्षेत्र दिवस किया गया। इन प्रक्षेत्र दिवसों के अवसर पर कुल 79 कृषकों ने भाग लिया।
- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 23–29, 2016 को जय किसान जय विज्ञान दिवस तकनीकी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस तकनीकी सप्ताह में वैज्ञानिकों ने गांव–गांव जाकर कृषि की उन्नत तकनीक कार्यक्रम में किसानों को कृषि और पशुपालन

संबंधी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान किसानों को उन्नत प्रजाति की प्याज की पौध भी उपलब्ध कराई गई और कृषि रसायन वितरित कर इनके प्रयोग की विधियां समझायी गई।

- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 16–17, 2016 को जी.जी.आई.सी., पिथौरागढ़ में एक कृषि मेले एवं कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र ने अपना स्टॉल लगाया और गोष्ठी में प्रतिभाग किया तथा किसानो एवं छात्रों का कृषि प्रश्नोत्तरी लिया तथा विजेताओं को पुरस्कार बाँटे गये।

किसान मेला एवं कृषक गोष्ठी का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में फसल सुरक्षा, पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि प्रसार एवं गृह विज्ञान विषय में कृषकों हेतु कुल 17 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 342 कृषकों/कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग कर तकनीकी जानकारी प्राप्त की।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 48 कृषकों के प्रक्षेत्र का भ्रमण कर 140 कृषकों की समस्याओं का निदान कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया गया।
- केन्द्र द्वारा रबी मौसम में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 25 कृषकों के प्रक्षेत्र पर कुल 0.25 हे. क्षेत्रफल में गृह वाटिका पर ग्राम सेलपेडू, कोलीढेक एवं डोगाभागू चम्पावत में प्रदर्शन लगाये गये।
- दिसम्बर 5, 2016 को ग्राम बेलखेत में एक दिवसीय मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 40 कृषकों के प्रक्षेत्र के कुल 40 मृदा नमूनों का परीक्षण कर 135 मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।
- रबी मौसम में मसूर की उन्नत प्रजाति पी.एल.–8 पर कुल 10 हे. क्षेत्रफल में क्लस्टर प्रदर्शन लगाया गया है।
- विगत त्रैमास में जनपद चम्पावत के विभिन्न स्कूलों के 20 समूहों में छात्र एवं छात्रों ने केन्द्र पर शैक्षणिक भ्रमण कर बेमौसमी सब्जी उत्पादन, मल्चिंग में सब्जी उत्पादन, जल संरक्षण, अजोला का उत्पादन, गृह वाटिका प्रबन्धन, संरक्षित खेती उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, सॉफ्ट ट्वाय बनाने की तकनीकी जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के दौरान 266 छात्र, 334 छात्रों तथा शिक्षक/शिक्षिकाओं ने प्रतिभाग किया।
- दिसम्बर 23–29, 2016 तक केन्द्र पर तकनीकी सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत कृषकों को नर्सरी उत्पादन, संरक्षित खेती, नीबू वर्गीय फलों का मूल्य संवर्धन विषय पर तकनीकी जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान ग्राम फोर्ती में पशु चिकित्सा शिविर तथा ज्योलाडी, पाटी में मृदा स्वास्थ सुधार शिविर का आयोजन किया गया। मत्स्य पालन के क्षेत्र में कार्य कर रहे प्रगतिशील किसानों को शीतजल मत्स्य अनुसंधान संस्थान, छीड़ापानी, चम्पावत का भ्रमण कराया गया। तकनीकी सप्ताह में कुल 95 पुरूष एवं 132 महिलाओं सहित कुल 227 कृषकों ने प्रतिभाग कर कृषि तकनीकी जानकारी प्राप्त की।

तकनीकी सप्ताह में प्रतिभाग करते हुए कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 04 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 103 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण सोया आधारित पदार्थ, स्वच्छता का महत्व, पोषण वाटिका का रखरखाव, मक्का का प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन विषय पर आयोजित किये गए।
- जनपद के अंगीकृत एवं अन्य ग्रामों में दलहनी फसलों के कुल 126 प्रदर्शनों का आयोजन 26 है. क्षेत्रफल के किया गया, जिसमें मसूर की पी.एल.–08 एवं चने की पी.जी.–186 प्रजाति के प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।
- मत्स्य पालन, उद्यान एवं गृह विज्ञान की नवीनतम तकनीकों पर 47 प्रदर्शनों का आयोजन 5.3 है. क्षेत्रफल में किया गया। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से सब्जी मटर की उन्नत प्रजाति काशी उदय के बारे में कृषको को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते है एवं उनकी समस्याओं का निराकरण भी किया जा रहा है।
- केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों के अर्न्तगत 71 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 367 किसानों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। 81 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग कर 3139 किसानों को लाभान्वित किसा गया एवं डायग्नोस्टिक विजिट कर किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया।
- केन्द्र द्वारा 01 शोध पत्र, 01 पापुलर लेख एवं 3 बार केन्द्र की गतिविधियाँ विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।
- पन्तनगर विश्वविद्यालय में दिसम्बर 16–17, 2016 को 'आधुनिक कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिक के समगतिशील विकास पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 शोध सारांशो (एकीकृत मत्स्यपालनः आर्थिक उन्नयन का साधन एवं खाद्य एवं पोषण जागरुकता) का प्रस्तुतिकरण किया गया।
- केन्द्र द्वारा जय जवान जय विज्ञान दिवस दिसम्बर 23–29, 2016 तक विभिन्न ग्रामों–औदली, ब्रहमनगर, एवं वीरपुरतारा में मनाया गया, जिसमें 110 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

तकनीकी सप्ताह में सम्बोधित करते हुए वैज्ञानिक

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अक्टूबर 17–20, 2016 तक आयोजित पन्तनगर किसान मेले में प्रतिभाग किया गया एवं तकनीकी प्रदर्शन स्टॉल के माध्यम से किया गया। ग्राम–औदली की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के द्वारा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन में मूल्यवर्द्धित पदार्थ हल्दी के पैकेट प्रदर्शन किये गये।
- दिसम्बर 05, 2016 को मृदा स्वास्थ्य दिवस जनपद स्तरीय कार्यक्रम में प्रतिभाग कर कृषकों के बीच में जागरुकता बढ़ाई गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 26 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 554 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को विभिन्न कृषि तकनीकों से जागरुक किया गया। प्रशिक्षणों में फसल उत्पादन, बागवानी, सब्जी उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, पशुपालन, कुक्कुट पालन, चारा उत्पादन, पोषण वाटिका से सम्बन्धित किसानों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी दी गयी। इन प्रशिक्षणों के अतिरिक्त दो प्रशिक्षणों का आयोजन ग्रामीण युवकों एवं युवतियों के लिये किया

गया। जिसमें पांच दिवसीय एक प्रशिक्षण कुक्कुट पालन विषय पर किया गया। पशुपालन को पोत्साहन देने हेतु ग्राम छरबा में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 24 पशुपालकों के 89 पशुओं को लाभान्वित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न रेखीय विभागों द्वारा आयोजित कुल 26 किसान गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग कर किसानों कों समसामयिक जानकारी दी गयी। कुल 26 किसान गोष्ठियों के आयोजन से 1977 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को जागरुक किया गया।

- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अर्न्तगत कुल 148 प्रदर्शनों का आयोजन 19 है. क्षेत्रफल में किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन धान, गेहूं, लहसुन, मटर, टमाटर, फूलगोभी, बन्दगोभी, ब्रोकली, पशुपालन, कुक्कुट पालन, पोषण वाटिका पर किया गया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अर्न्तगत खरीफ 2016 में उर्द के 25 प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। इसी मिशन के अर्न्तगत रबी 2016–17 में मसूर में 28 प्रदर्शनों का आयोजन 10 है. क्षेत्रफल में किया गया। सब्जी उत्पादन विषय पर किये गये प्रदर्शनों में टमाटर की फसल में सक्षम एवं दीपांकर हाईब्रिड का प्रदर्शन अभी तक बेहतर पाया गया है। इन संकर किस्मों में बैक्टीरियल विल्ट का प्रकोप नहीं देखा गया जो इस क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या है। जनजातीय परियोजना (टी.एस.पी.) के अर्न्तगत चकराता विकासखण्ड के तीन गांवों में मटर (प्रजाति–स्वीट पर्ल) के 25 प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। इसी प्रकार लहसुन की एग्रीफाउण्ड पार्वती प्रजाति के 38 प्रदर्शनों का आयोजन चकराता विकासखण्ड के तीन गांवों एवं कालसी विकासखण्ड के एक गांव में किया जा रहा हैं।
- कुक्कुट पालन विषयक प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अर्न्तगत रैड कार्निस एवं प्ले माउथ रॉक के संकर प्रजाति के 600 चूजों को 25 कृषक ईकाईयों को विकासखण्ड–कालसी, सहसपुर एवं विकासनगर के चयनित गांवों में वितरित किया गया। चारा उत्पादन को बढावा देने हेतु बरसीम की मसकावी प्रजाति के 3.5 है. क्षेत्रफल में 28 कृषक प्रक्षेत्रों पर उत्पादन किया जा रहा है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्रों पर कुल 109 भ्रमण कर 470 कृषकों एवं कृषक महिलाओं की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 4 रेडियो वार्ता दिये गये जबकि देहरादून दूरदर्शन को इन वैज्ञानिकों द्वारा कृषि सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर 09 टी.वी. वार्ता दिये गये।
- केन्द्र द्वारा सर्वे ऑफ इण्डिया, देहरादून में नवम्बर 27, 2016 को जैविक कृषि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देहरादून जनपद के 530 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, मा. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री राधा मोहन सिंह ने कृषि के बदलते परिवेश में रसायनों का प्रयोग कम करते हुए जैविक खेती को प्रोत्साहन देने की बात कही। उन्होंने प्रदेश में सिंचाई के अर्न्तगत क्षेत्रफल बढाने के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का अधिक से अधिक लाभ लेने का किसानों का आवाहन किया।

जैविक कृषि सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मा. कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह

- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 05, 2016 को विश्व मृदा दिवस एवं प्री–रबी कैम्पेन का आयोजन कृषि विभाग, देहरादून के सहयोग से वीर माधो सिंह भण्डारी किसान भवन, देहरादून में किया गया, जिसमें 200 कृषकों एवं कृषक महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर 100 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।
- केन्द्र के परिसर में दिसम्बर 29, 2016 को मा. कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री पुरषोत्तम रुपाला द्वारा समेकित मधुमक्खी पालन विकास केन्द्र का शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर पन्तनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. जे. कुमार, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास एवं निदेशक अनुसंधान डा. जे.पी. सिंह भी उपस्थित थे।

संगोष्ठी के दौरान मा. कृषि राज्य मंत्री श्री पुरषोत्तम रूपाला

- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 31, 2016 तक प्याज की एग्रीफाउण्ड लाईट रैड प्रजाति की 62.20 कु. पौंध देहरादून जनपद के किसानों को आपूर्ती की गयी, जिससे केन्द्र को रु. 3.73 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ। केन्द्र द्वारा प्याज की पौंध किसानों को आपूर्ती करने के लिये 100 कु. का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अभी तक प्याज की पौंध से 672 किसानों को लाभान्वित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम एवं जाखधार की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठकों का आयोजन क्रमशः नवम्बर 29, 2016 एवं नवम्बर 30, 2016 को किया गया। बैठकों में अप्रैल से नवम्बर, 2016 तक की प्रगति आख्या की समीक्षा के साथ–साथ वर्ष 2017–18 में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों पर विस्तृत चर्चा की गई, जिनमें डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा; ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृ. एवं ज.स. अभि.); डा. जे.एल. सिंह, प्राध्यापक (पशु औषधि विज्ञान), सम्बन्धित जनपद के रेखीय विभागों के अधिकारियों, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों व कर्मचारियों एवं कृषक सदस्यों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की मध्यकालीन समीक्षा कार्यशाला का आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय में नवम्बर 21–22, 2016 को उत्तराखण्ड के 13 कृषि विज्ञान केन्द्रों की मध्यकालीन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रभारी अधिकारियों द्वारा अपने–अपने केन्द्रों की अप्रैल से अक्टूबर, 2016 तक की प्रगति एवं नवम्बर 2016 से मार्च 2017 तथा अप्रैल 2017 से मार्च 2018 तक की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यशाला में दिये गये सुझावों को सम्मिलित करते हुए कार्ययोजना को अन्तिम रूप दिया गया। इस कार्यशाला में कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों के साथ–साथ विश्वविद्यालय से निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक अनुसंधान केन्द्र डा. जे.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक प्रसार (कृषि अभियंत्रण) डा. टी.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान) डा. डी.सी. डिमरी सहित प्रसार शिक्षा निदेशालय के समस्त वैज्ञानिक एवं भा.कृ.अ.प.–अटारी, कानपुर से श्री एस. एन. यमूल व श्री विवेक कुमार यादव द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कृषक महोत्सव रबी–2016 में विश्वविद्यालय का सक्रिय योगदान

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विगत् वर्षों की भाँति राज्य में कृषक महोत्सव रबी–2016 का आयोजन अक्टूबर 02 से 09, 2016 तक राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में तथा नवम्बर 03 से 10, 2016 तक जनपद हरिद्वार, ऊधमसिंहनगर, देहरादून एवं नैनीताल के मैदानी क्षेत्रों में न्याय पंचायत स्तर पर किया गया। आधुनिक कृषि तकनीकों एवं

आवश्यक कृषि निवेश को कृषक प्रक्षेत्र तक ले जाने का कृषक महोत्सव एक सर्वोत्तम माध्यम है, जिसमें विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत 09 कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित विश्वविद्यालय मुख्यालय के प्रसार शिक्षा वैज्ञानिकों, कृषि महाविद्यालय, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय, मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्रों हेतु गठित क्रमशः 11 एवं 04 वैज्ञानिकों के दलों द्वारा अलग–अलग जनपदों में अलग–अलग रूटों पर संचालित कृषक रथों पर प्रतिभाग कर न्याय पंचायत स्तर पर आयोजित कृषक गोष्ठियों में कृषकों से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। कृषक महोत्सव में वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को कृषि, जल संग्रहण, तालाब निर्माण, मृदाक्षरण नियन्त्रण, पशुओं के पालन–पोषण एवं प्रबंधन, फसल उत्पादन की नवीन तकनीकों, फसलों के रोग एवं कीट प्रबन्धन इत्यादि से सम्बधित जानकारी दी गई।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, गन्ना पर्यवेक्षक/निरीक्षक, उद्यान विभाग के कार्मिक, कृषि एवं भूमि संरक्षण अधिकारी तथा जलागम प्रबन्धन विभाग के अधिकारी/प्रसार कर्मी, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु गन्ना उत्पादन की उन्नत तकनीकी एवं अन्तःशस्यन, मृदा एवं जल संरक्षण तकनीक तथा औद्यानिकी में आपूर्ति श्रृंखला प्रबन्धन विषयक 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 39 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

डा0 जितेन्द्र सिंह बेस्ट पेपर एवं यंग साईंटिस्ट अवार्ड से सम्मानित

- सोसाइटी फॉर साईंटिफिक डेवलपमेन्ट इन एग्रीकल्चर एण्ड टैक्नोलॉजी द्वारा दिसम्बर 10–11, 2016 को प्रो. जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद (तेलंगाना) में 'इनोवेटिव एण्ड करेन्ट एडवान्सेज इन एग्रीकल्चर एण्ड एलाइड साइन्सेज' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो, प्रसार शिक्षा निदेशालय को 'यंग साइंटिस्ट अवार्ड–2016' से सम्मानित किया गया।

यंग साईंटिस्ट अवार्ड प्राप्त करते हुए डा. जितेन्द्र सिंह

उन्हें यह सम्मान कृषि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में समग्र उपलब्धियों के आधार पर सहायक महानिदेशक (एन.ए.एस.एफ.), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली, डा. पी.के. अग्रवाल द्वारा सहायक महानिदेशक (फूड एवं फाडर क्राप्स), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली, डा. आई.एस. सोलंकी व अन्य की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

- एकेडमिक रिसर्च जर्नल्स (इण्डिया), नई दिल्ली द्वारा दिसम्बर 30–31, 2016 को जोधपुर (राजस्थान) में दो दिवसीय 'रिसेन्ट एडवान्सेज इन एग्रीकल्चर एण्ड हार्टिकल्चर साईन्सेज' विषयक आई.जे.टी.ए. के चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो, प्रसार शिक्षा निदेशालय को 'बेस्ट पेपर अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। उक्त कॉन्फ्रेंस में डा. सिंह द्वारा ''उत्तराखण्ड में पर्वतीय कृषकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में बढ़ोत्तरी के लिए एकीकृत पशुधन एवं मुर्गी पालन खेती प्रणाली'' विषयक शोध पत्र प्रस्तुत किया गया था।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

- गेंहू में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2–4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत 625 ग्राम या 2–4 डी इमाइन साल्ट 72 प्रतिशत 600 मिली. दवा को 600–800 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति है. की दर से बुवाई के 35–40 दिन के अन्दर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- मसूर, मटर व चना में रतुआ रोग के नियंत्रण के लिए जिंक, मैगनीज, कार्बामेट की 2.5 किग्रा. मात्रा को 700–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। चने में फलीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ई.सी. की 1.25 लीटर या साइपरमेथ्रिन 500–600 मिली. को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें।
- गेंहू में पीला रतुआ रोग का प्रकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. या हैक्साकोनेजोल 1 लीटर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। पर्वतीय क्षेत्र में गेंहू में पर्याप्त नमी होने पर असिंचित दशा में 0.5 किग्रा. व सिंचित दशा में 2–2.5 किग्रा. यूरिया प्रति नाली की दर से डालें।
- मटर और मसूर में सफेद विगलन रोग दिखने पर कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- सरसों एवं तोरिया में माहू कीट का प्रकोप होने पर 1 लीटर डाइमेथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. का 1.4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में जनवरी माह में घाटियों में आलू, लोबिया, राजमा, भिण्डी एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।
- पाला की सम्भावना होने पर पपीते के बाग में सिंचाई करें तथा धूंआ करें।
- फरवरी के दूसरे पखवाड़े में सूरजमुखी की बुवाई करें।
- फरवरी माह में मैदानी क्षेत्रों में बैंगन की 60X45 सें.मी. की दूरी पर रोपाई करें।
- पालक, मैंथी, धनिया में कीटों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत रोगोर कीटनाशी का एक छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी माह में आलू की अगेती बुवाई 45–60 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में 15–20 से.मी. की दूरी पर 5–7 से.मी. गहराई पर करें।
- फरवरी माह में पर्वतीय क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च की नर्सरी डालें एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।
- मार्च माह में उर्द एवं मूंग की क्रमशः 30–35 किग्रा. एवं 25–30 किग्रा. बीज की प्रति है. दर से बुवाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्र में मार्च माह में चना, मटर के पत्ती सुरंगक व फली छेदक कीट तथा मसूर के माहू कीट के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 15 मिली. दवा को 16–20 लीटर पानी में घोलकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।

पशुपालन हेतु

- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटें। मुर्गी घरों में दिन और रात को कुल 16 घंटे प्रकाश बनाए रखें।
- फरवरी माह में चूजे पालने की व्यवस्था करें।
- व्यस्क पशुओं को फरवरी माह में अंतःकृमि नाशक दवा पिलाएं। छः माह की उम्र के बच्चों को मुंहपका, खुरपका रोगों से बचाव हेतु टीका लगवाएं।
- पशुओं को अफरा से बचाव हेतु फूली हुई बरसीम न खिलाएं। अफरा होने पर उपचार हेतु 500 मिली. सरसों का तेल, 100 ग्राम काला नमक, 50 ग्राम मीठा सोडा, 15 ग्राम अजवाईन तथा 10 ग्राम हींग का मिश्रण खिलाएं।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद एवं श्रीवस्ती जनपदों में एक–एक अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना हेतु स्थल चयन समिति के सदस्य के रूप में नवम्बर 07–10, 2016 को भ्रमण किया गया।
- नवम्बर 23, 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल) का भ्रमण कर केन्द्र द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यों का निरीक्षण एवं अनुश्रवण किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 05 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन एवं कृषि प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 120 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर छः दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 560 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 575 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल ₹ 1,08,760 के साहित्य एवं ₹ 34,020 के धान्य फसलों, दलहनी, तिलहनी, मोटा अनाज एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

निदेशक की कलम से

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की उन्नत तकनीकों का प्रसार किया जा रहा है। राज्य के कृषकों को उन्नत तकनीकों से अवगत कराकर उनको इन तकनीकों से अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों इत्यादि का आयोजन किया जाता है। कृषक भी इन उन्नत तकनीकों को अपनाने एवं हस्तानान्तरण में अपनी रूचि एवं सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी), उत्तराखण्ड भी कृषि तकनीकी हस्तानान्तरण एवं कृषि व सम्बन्धित क्षेत्र में मानव संसाधन विकास हेतु प्रसार कर्मियों/कृषकों, कृषक महिलाओं/ग्रामीण युवक–युवतियों में क्षमता विकास हेतु सतत् प्रयासरत् हैं।

कृषकों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर कृषि विज्ञान केन्द्र, क्षेत्र के कृषकों के लिए एक सूचना स्रोत के रूप में कार्य कर रहे हैं, जिनसे प्राप्त सूचनाओं एवं तकनीकों को अपनाकर कृषक अपनी आय में वृद्धि कर आर्थिक संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इसी सन्दर्भ में वर्ष 2016 में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 632 प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिससे 14,555 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए, जिसमें प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा 58 एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 559 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे क्रमशः 1,511 एवं 12,743 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा जिला एवं विकास खण्ड स्तरीय प्रसार कार्यकर्ताओं/अधिकारियों, एफ.ए.सी. सदस्यों, प्रसार कर्मियों, फार्म स्कूल संचालकों, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धकों एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 15 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें कुल 301 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा तिलहन, दलहन एवं अन्य फसलों में 6,479 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया, जिनके अन्तर्गत कुल 554.87 है. क्षेत्र आच्छादित किया गया तथा 47 प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 341 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा उक्त अवधि में 2,099 प्रक्षेत्र भ्रमण किये गये, जिनके माध्यम से 15,056 कृषकों की समस्याओं का समाधान करने के साथ–साथ उन्हें उन्नत कृषि की तकनीकी उपलब्ध कराई गई। केन्द्रों द्वारा 16 किसान मेलों, 17 कृषि प्रदर्शनियों एवं 329 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः 51037, 39742 एवं 30554 कृषक लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा उक्त अवधि में 44 प्रक्षेत्र दिवसों, 914 नैदानिकी भ्रमण, 95 परामर्श भ्रमण आयोजित किये गये, जिनसे क्रमशः 1076, 4838 एवं 1029 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 पशु शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें 66 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। उक्त अवधि में 5880 कृषकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भ्रमण कर तथा 1150 कृषकों द्वारा हेल्प लाइन (दूरभाष) के माध्यम से केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी जानकारी अर्जित की गई।

वैज्ञानिकों द्वारा कृषकोंपयोगी 15 रेडियो वार्ताओं तथा 34 टी.वी. कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु रिकार्डिंग दी गई। इसके साथ ही 37 उपयोगी कृषि लेखों का भी प्रकाशन किया गया। केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे गतिविधियों का विभिन्न समाचार पत्रों में 122 समाचार प्रकाशित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 507.67 कु. खाद्यान्न फसलों के उन्नत बीजों के साथ–साथ 2,42,761 सब्जी पौधों तथा 8,550 उत्कृष्ट प्रजाति के फलों के पौधों का भी उत्पादन किया।

कृषकों को समस्त सूचनाएं एक स्थल पर प्रदान करने के उद्देश्य से एकल खिड़की पद्धति के माध्यम से कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र द्वारा टेलीफोन एवं हेल्पलाइन के माध्यम से उक्त अवधि में कृषकों की 2289 समस्याओं का समाधान किया गया तथा 2766 कृषकों ने केन्द्र पर भ्रमण किया। साथ ही एटिक द्वारा रू0 2,61,056 के प्रसार पुस्तिकाओं तथा रू0 3,48,513 के बीजों की बिक्री की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्रों को अपनी कार्ययोजना में क्षेत्र आधारित तकनीकों, सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाने, गुणवत्तायुक्त बीज, रोपण सामग्री, परागण हेतु मधुमक्खी, जैविक खाद, जैविक कीटनाशी, पोषक तत्व, नाशीजीव प्रबन्धन, कटाई पूर्व एवं उपरान्त प्रबन्धन पर ध्यान देना होगा। केन्द्रों को कृषि ऋण एवं फसल बीमा सम्बन्धी जानकारी भी कृषकों को प्रदान करनी होगी, जिससे कृषक उपलब्ध वित्तीय सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों का कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं उत्तराखण्ड को समृद्ध एवं खाद्यान्न निर्भर बनायेंगे।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

100वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर